International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

हिंदी लोकगीतों की परंपरा, महत्व और संरक्षण प्रयास

Shekhar Sharma
Research Scholar, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore
Dr. Rajendra Kashinath Baviskar
Supervisor, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

संक्षेप

हिंदी लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग हैं, जो पीढ़ियों से मौखिक परंपरा के रूप में संरक्षित होते आए हैं। ये गीत न केवल मनोरंजन का साधन रहे हैं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक जीवन की गहराइयों को भी व्यक्त करते हैं। विवाह, जन्म, ऋतु-परिवर्तन, त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों पर गाए जाने वाले लोकगीत सामूहिक जीवन के उल्लास और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहे हैं। इनमें जीवन के सुख-दुख, संघर्ष और आशाओं का सजीव चित्रण मिलता है, जिससे वे समाज की जीवंत धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

लोकगीतों का महत्व इस बात से भी स्पष्ट होता है कि इनमें स्थानीय बोलियों, रीति-रिवाजों और मान्यताओं का सहज समावेश होता है। इनकी सरल भाषा और लयबद्धता जनमानस को गहराई से जोड़ती है। परंतु आधुनिकता, शहरीकरण और तकनीकी प्रभावों के कारण लोकगीतों की परंपरा संकटग्रस्त होती जा रही है। युवा पीढ़ी का झुकाव फिल्मी और पाश्चात्य संगीत की ओर अधिक होने से लोकगीत धीरे-धीरे हाशिए पर पहुँच रहे हैं।

संरक्षण के लिए आवश्यक है कि लोकगीतों का संकलन, लिप्यंतरण और डिजिटलीकरण किया जाए। शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक संगठनों और सरकारी प्रयासों से इन्हें पुनर्जीवित किया जा सकता है। लोकगीत केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत बनाने वाले साधन हैं।

कीवर्ड्स: हिंदी लोकगीत, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक धरोहर, संरक्षण प्रयास, सामाजिक जीवन

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य और संस्कृति की व्यापक परंपरा में लोकगीतों का विशेष स्थान है। ये गीत मानव जीवन के विविध अनुभवों, भावनाओं और सामाजिक मूल्यों के सहज अभिव्यक्ति माध्यम हैं। लोकगीतों की उत्पत्ति सभ्यता के आरंभिक चरण से जुड़ी मानी जाती है, जब मनुष्य ने अपनी भावनाओं को स्वर और लय के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास किया। हिंदी लोकगीत ग्राम्य जीवन की मिट्टी से जुड़े हुए हैं, जो प्राकृतिक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

परिवेश, कृषि-प्रधान जीवनशैली और धार्मिक आस्थाओं के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं। जन्म, विवाह, उत्सव, ऋतु-परिवर्तन, धार्मिक अनुष्ठान और श्रम-संलग्न परिस्थितियाँ इन गीतों के विषय रहे हैं, जो जीवन के हर पहलू को अपनी विशिष्ट लय और सरल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। इनमें लोकमानस की आशाएँ, आकांक्षाएँ, संघर्ष और सामूहिक अनुभव समाहित होते हैं, जिससे वे केवल गीत न होकर सांस्कृतिक दर्पण के रूप में स्थापित हो जाते हैं। हिंदी लोकगीतों की यही विशेषता उन्हें शास्त्रीय संगीत और साहित्य से भिन्न बनाती है, क्योंकि वे जनमानस की सरलता और जीवन्तता के साथ जुड़े रहते हैं।

किन्तु आधुनिकता और वैश्वीकरण के इस दौर में लोकगीतों की परंपरा गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। तेज़ी से बदलते सामाजिक ढाँचे, शहरीकरण और डिजिटल मनोरंजन के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी लोकगीतों से दूर होती जा रही है। जहाँ पहले ये गीत सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान का आधार हुआ करते थे, वहीं अब वे धीरे-धीरे सीमित अवसरों तक सिमटते जा रहे हैं। यह स्थिति चिंताजनक है क्योंकि लोकगीत केवल अतीत की याद नहीं हैं, बल्कि वर्तमान की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूती प्रदान करने वाले साधन भी हैं। इनके संरक्षण हेतु संकलन, दस्तावेजीकरण, डिजिटलीकरण और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में समावेश जैसे प्रयास आवश्यक हो गए हैं। साथ ही, सांस्कृतिक संस्थाओं और सरकार को भी लोकगीतों के संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभानी होगी, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस अमूल्य धरोहर से वंचित न हों। इस प्रकार हिंदी लोकगीतों की परंपरा और संरक्षण पर विचार करना न केवल साहित्यिक आवश्यकता है, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है।

लोकगीतों की सामान्य परिभाषा

लोकगीत ऐसे गीत होते हैं जो आम लोगों द्वारा रचित होते हैं और जो पीढ़ी दर पीढ़ी संवाद का माध्यम बनकर समाज में प्रचलित होते हैं। ये गीत आम तौर पर अनौपचारिक होते हैं और किसी विशेष वर्ग या समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को प्रकट करते हैं। लोकगीतों में किसी भी प्रकार की शास्त्रीय या काव्यात्मक जटिलता की बजाय, सरलता और सहजता होती है, जो इन्हें जनमानस के बीच बहुत लोकप्रिय बनाती है। लोकगीतों के विषय सामान्यतः जीवन के विविध पहलुओं, जैसे प्रेम, विवाह, ऋतु परिवर्तन, कृषि कार्य, धार्मिक विश्वास और सामाजिक मुद्दों से संबंधित होते हैं। ये गीत न केवल लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं की अभिव्यक्ति होते हैं, बल्कि सामूहिक चेतना और समाज की सोच का भी प्रतिबिंब होते हैं। लोकगीतों की संगीत रचनाएँ सरल और लयबद्ध होती हैं, जिनमें आमतौर पर तात्कालिक भावनाओं का सहज रूप से प्रदर्शन किया जाता है। ये गीत खासतौर पर जन समुदाय की सामूहिक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

जीवनशैली, संघर्ष और परंपराओं को जीवित रखते हैं। लोकगीतों की शाब्दिक संरचना आसान और याद रखने योग्य होती है, जिससे ये गीत आसानी से लोगों के बीच फैलते हैं। लोकगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व इसलिए भी है कि ये सिर्फ संगीत का रूप नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता और पहचान का प्रतीक भी होते हैं।

- **भारतीय लोकगीतों का समय और क्षेत्रीय प्रसार**

भारत में लोकगीतों का समय और क्षेत्रीय प्रसार अत्यधिक विविध है, और प्रत्येक क्षेत्र के लोकगीतों में अपनी विशेषता और रंग होते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषा समूहों और सांस्कृतिक परंपराओं के कारण लोकगीतों का विविध रूप विकसित हुआ। उत्तर भारत में, खासकर पंजाब, उत्तर प्रदेश, और राजस्थान जैसे राज्यों में लोकगीतों का प्रभाव गहरा है। इन क्षेत्रों में लोकगीतों का संबंध कृषि कार्यों, प्रेम काव्य, वीरता की गाथाओं, और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है। उदाहरण स्वरूप, पंजाबी लोकगीतों में विशेष रूप से प्रेम और वीरता के गीत प्रसिद्ध हैं, जिनमें लोक नायकियों की वीरता और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष को दर्शाया जाता है। दक्षिण भारत में, तमिल, कन्नड़, तेलुगु और मलयालम भाषाओं में भी समृद्ध लोकगीत परंपराएँ हैं। दक्षिण भारतीय लोकगीतों में धार्मिक भक्ति, भगवान की महिमा, और प्रकृति से जुड़ी बातें गाई जाती हैं। कर्नाटिका संगीत का भी लोक गीतों में एक महत्वपूर्ण स्थान है, जो विशेष रूप से भक्तिकाव्य और शास्त्रीय संगीत के रूप में प्रकट होता है। मध्यभारत, बिहार, और बंगाल में भी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा है, जहाँ विभिन्न मौसमों और कृषि कार्यों पर आधारित गीत गाए जाते हैं। पश्चिम भारत, खासकर गुजरात और महाराष्ट्र में भी लोकगीतों का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। गुजरात में गरबा और डांडिया जैसे लोक गीतों का प्रसार है, जो सामाजिक आयोजनों और त्योहारों से जुड़े होते हैं। वहीं, महाराष्ट्र में वारंवारिता और भजन गीतों का महत्व अधिक है।

- **लोकगीतों का लोक जीवन और सामाजिक संरचना से संबंध**

लोकगीतों का गहरा संबंध भारतीय समाज के लोक जीवन और सामाजिक संरचना से है। भारत में लोकगीतों का मुख्य उद्देश्य समाज की सामूहिकता और सामाजिक संरचनाओं को दर्शाना होता है। ये गीत न केवल समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन के अनुभवों को व्यक्त करते हैं, बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति, परंपराएँ, संघर्ष, और जीवन के सामान्य पहलुओं को भी उजागर करते हैं। भारतीय लोकगीतों में कृषि, परिवार, त्योहारों, और सामाजिक कार्यों का मुख्य स्थान है। जैसे कि मानसून के मौसम में गाए जाने वाले गीत, फसल कटाई के समय गाए जाने वाले गीत, और विवाह जैसे सामाजिक समारोहों में गाए जाने वाले गीत, ये सभी समाज के प्रत्येक स्तर के लोगों के जीवन के साथ गहरे जुड़े हुए हैं। विशेष रूप से

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

ग्रामीण इलाकों में, ये गीत जीवन के हर पहलू को उजागर करते हैं और समाज के विभिन्न हिस्सों के बीच एकता का प्रतीक बनते हैं।

इसके अलावा, लोकगीतों में सामाजिक संरचना का भी महत्वपूर्ण चित्रण होता है। इनमें सामाजिक नियमों, परंपराओं और मान्यताओं का पालन करने की प्रवृत्ति को दर्शाया जाता है। लोकगीतों के माध्यम से एक साथ मिलकर समाज के विभिन्न वर्ग और जातियाँ एकजुट होती हैं। उदाहरण के लिए, विवाह गीत, बच्चों के गीत और धार्मिक अनुष्ठानों के गीत, ये सब समाज के विभिन्न पहलुओं को और उस समय की सामाजिक स्थिति को प्रकट करते हैं। लोकगीतों में महिलाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से विवाह गीतों में महिलाओं के भावनात्मक संघर्ष, उनके प्रेम और विवाह के प्रति दृष्टिकोण का चित्रण किया जाता है। यह समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी सामाजिक भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। भारतीय लोकगीतों में संघर्ष, स्वतंत्रता, समानता और समानता की तलाश भी देखने को मिलती है, जिससे समाज की परंपराओं और सामाजिक दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, भारतीय लोकगीत न केवल जनजीवन और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं, बल्कि वे समाज की सामाजिक संरचनाओं, परंपराओं, और मूल्यों का गहरा प्रतिबिंब भी होते हैं। ये गीत न केवल हमारे अतीत को संजोते हैं, बल्कि हमारे समाज की भावनाओं, संघर्षों और सपनों को भी जीवित रखते हैं।

अध्ययन का महत्व

हिंदी भाषा में लोकगीतों की परंपरा हमारी सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमारे समाज की भावनाओं, परंपराओं और मूल्यों को व्यक्त करती है। इन गीतों में समाज की सामूहिक स्मृतियाँ, उत्सव, धार्मिक विश्वास और इतिहास छिपा होता है, जो हमारी पहचान को जीवंत बनाए रखते हैं। हालांकि, आधुनिकता, शहरीकरण और वैश्विक संस्कृति के प्रभाव के कारण यह परंपरा विलुप्त होने के कगार पर है। ऐसे में लोकगीतों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए अध्ययन का महत्व और भी बढ़ जाता है। अध्ययन के माध्यम से लोकगीतों के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को समझा जा सकता है। यह प्रक्रिया न केवल इनके संरक्षण में सहायक होती है, बल्कि इन्हें नई पीढ़ियों तक पहुँचाने का माध्यम भी बनती है। शोध से लोकगीतों की विविधता, उनकी संरचना, और उनके क्षेत्रीय रूपों को संरक्षित किया जा सकता है। इसके अलावा, डिजिटल अभिलेखन, साहित्यिक समीक्षा और मीडिया के माध्यम से लोकगीतों को व्यापक स्तर पर प्रचारित करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बनाई जा सकती हैं। अध्ययन का उद्देश्य केवल सांस्कृतिक धरोहर को बचाना नहीं है, बल्कि इसे समाज के सांस्कृतिक और शैक्षणिक विकास के लिए उपयोगी बनाना भी है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

साहित्य की समीक्षा

सिंह, आर. (2010). भारतीय लोकगीतों की परंपरा देश की सांस्कृतिक धरोहर और सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब है, जो समाज की परंपराओं, मान्यताओं और जीवनशैली को प्रकट करती है। ये गीत मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी गाए जाते रहे हैं। भारतीय लोकगीत क्षेत्रीय विविधताओं से भरपूर हैं और इनमें विवाह, जन्म, त्यौहार, ऋतुओं, कृषि, भक्ति और वीरता जैसे विषय शामिल हैं। हिंदी क्षेत्र के सोहर, कजरी, चैती, आल्हा, और भक्ति गीत इसका उदाहरण हैं। सरल भाषा, मधुर धुनों और पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ लोकगीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं। आधुनिकता, शहरीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से यह परंपरा लुप्त होती जा रही है, जिससे इनके संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गई है। लोकगीतों का अध्ययन और संरक्षण उनकी मौलिकता और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शर्मा, पी. (2011). लोकगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक और सामूहिक चेतना के सजीव प्रतीक हैं, जो उसकी परंपराओं, मान्यताओं और जीवनशैली को अभिव्यक्त करते हैं। इनमें समाज की भावनाएँ, संघर्ष, प्रेम, भक्ति, प्रकृति से जुड़ाव और ऐतिहासिक घटनाएँ झलकती हैं। भारतीय समाज में लोकगीत विवाह, जन्म, त्यौहार, ऋतु परिवर्तन, कृषि और धार्मिक अनुष्ठानों जैसे विविध अवसरों पर गाए जाते हैं। ये गीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समाज में सामूहिकता और सांस्कृतिक जुड़ाव की भावना को भी प्रोत्साहित करते हैं। हालांकि, आधुनिकता, शहरीकरण और पाश्चात्य प्रभाव के कारण लोकगीतों की यह समृद्ध परंपरा धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। पारंपरिक कलाकारों और समुदायों की घटती संख्या, तकनीकी प्रगति और नई पीढ़ी में रुचि की कमी के कारण इनका संरक्षण आज की महती आवश्यकता बन गया है।

गुप्ता, एस. (2012). हिन्दी लोकगीतों में सामाजिक चेतना का अद्‌भुत प्रतिबिंब दिखाई देता है, जो समाज की सामूहिक भावनाओं, परंपराओं और मूल्यों को व्यक्त करते हैं। ये गीत न केवल समाज के रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक परंपराओं का चित्रण करते हैं, बल्कि सामाजिक एकता, न्याय, प्रेम, साहस और आध्यात्मिकता का संदेश भी देते हैं। ग्रामीण समाज में गाए जाने वाले लोकगीत जैसे सोहर, विवाह गीत, कजरी, चैती और आल्हा समाज की विभिन्न गतिविधियों और संबंधों को उजागर करते हैं। इनमें परिवार, समुदाय और प्रकृति के साथ जुड़ाव की गहरी भावना होती है। लोकगीतों के माध्यम से स्त्रियों की भावनाएँ, किसानों के संघर्ष, श्रमिकों की मेहनत, और त्योहारों की सामूहिकता को अभिव्यक्ति मिलती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

वर्मा, के. (2013). लोकगीतों का संरक्षण आज के समय में एक गंभीर चुनौती बन गया है, क्योंकि आधुनिकता, शहरीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने इस प्राचीन परंपरा को विलुप्ति के कगार पर ला दिया है। लोकगीतों की मौखिक परंपरा और इनसे जुड़े कलाकारों की घटती संख्या, नई पीढ़ी में रुचि की कमी, और पारंपरिक वाद्य यंत्रों का अप्रचलन संरक्षण के प्रमुख अवरोध हैं। इसके अतिरिक्त, लोकगीतों के क्षेत्रीय और भाषाई स्वरूपों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण और अभिलेखन न होने से भी इनकी मौलिकता और विविधता खोने का खतरा बढ़ गया है। इन चुनौतियों का समाधान सामूहिक प्रयासों और आधुनिक तकनीकों के उपयोग में निहित है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लोकगीतों का ऑडियो-वीडियो दस्तावेजीकरण, शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में इनका समावेश, और सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन लोकगीतों के संरक्षण के प्रभावी उपाय हो सकते हैं।

लोकगीतों की भूमिका और उनके उद्देश्य

लोकगीत भारतीय संस्कृति का एक अनमोल हिस्सा हैं, जो न केवल समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन को दर्शाते हैं, बल्कि वे एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में भी कार्य करते हैं। ये गीत समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे पारंपरिक जीवनशैली, धार्मिक आस्थाएँ, प्रेम, और सामाजिक समस्याओं का प्रतिबिंब होते हैं। लोकगीतों का सांस्कृतिक महत्व गहरा है, क्योंकि ये गीत समाज की जड़ों, परंपराओं, और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में मदद करते हैं। इन गीतों के माध्यम से समाज अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, और धार्मिक विश्वासों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाता है। इसके अलावा, लोकगीतों का सामाजिक महत्व भी अत्यधिक है, क्योंकि ये गीत समाज में जागरूकता और एकता का संचार करते हैं। खासकर जब समाज में कोई आंदोलन या बदलाव आ रहा होता है, लोकगीत इन बदलावों को छेड़ने और फैलाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाते हैं। लोकगीतों का उद्देश्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। इनमें गहरे सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्य भी निहित होते हैं। एक ओर जहां लोकगीत मनोरंजन का साधन होते हैं, वहीं दूसरी ओर ये गीत लोगों को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और समाज की समस्याओं के बारे में जागरूक करते हैं। भारतीय लोकगीतों में समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ें गूंजती हैं, जैसे किसानों, श्रमिकों, महिलाओं, और आदिवासियों की आवाज़। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता संग्राम के समय लोकगीतों ने भारतीय जनता को स्वतंत्रता की ओर प्रेरित किया, और वहीं श्रमिक आंदोलनों और महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष में भी लोकगीतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोकगीतों में कई बार समाज के असमानताओं, भेदभाव, और संघर्षों को उजागर किया जाता

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

है, जो न केवल गायक और श्रोताओं के बीच एक साझेदारी का निर्माण करते हैं, बल्कि समग्र समाज को परिवर्तन के लिए प्रेरित भी करते हैं।

लोकगीतों का लोक और शास्त्रीय संगीत से संबंध

- **लोकगीत और शास्त्रीय संगीत की विशेषताएँ**

लोकगीत और शास्त्रीय संगीत दोनों भारतीय संगीत परंपरा के महत्वपूर्ण अंग हैं, लेकिन इन दोनों की अपनी विशेषताएँ और स्वभाव होते हैं। लोकगीत, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, उन गीतों को कहते हैं जो आम जनता द्वारा रचित होते हैं और जो आम तौर पर मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होते हैं। इन गीतों का संगीत सरल, सहज और आम जनता की समझ में आने वाला होता है। लोकगीतों में अक्सर ग्रामीण जीवन, प्रेम, समाज के संघर्ष, त्योहार, और धार्मिक अनुष्ठान जैसे विषयों का चित्रण होता है। लोकगीतों का उद्देश्य मनोरंजन और सामाजिक जागरूकता फैलाना होता है, और ये सामूहिक रूप से गाए जाते हैं, जहां गीतों के साथ नृत्य और अभिनय भी शामिल होता है।

वहीं, शास्त्रीय संगीत एक अत्यधिक संरचित और जटिल संगीत परंपरा है, जिसमें विशिष्ट राग और तानें होते हैं। यह संगीत विधिपूर्वक संरचित होता है और इसमें गीतों के प्रदर्शन के लिए विशेष नियमों का पालन किया जाता है। शास्त्रीय संगीत के तहत भारतीय संगीत की दो प्रमुख शैलियाँ—हिंदुस्तानी और कर्नाटिक—आती हैं। इसमें राग, ताल, लय, और स्वर का विशेष ध्यान रखा जाता है, और यह शास्त्रों और धार्मिक ग्रंथों से प्रेरित होता है। शास्त्रीय संगीत में गीतों का चयन बहुत विचारशील तरीके से किया जाता है और यह भारतीय संस्कृति के दर्शन, भक्ति और आध्यात्मिकता का प्रतीक होता है।

- **दोनों के बीच समानताएँ और भिन्नताएँ**

लोकगीत और शास्त्रीय संगीत के बीच कुछ समानताएँ भी हैं, जैसे दोनों ही भारतीय संगीत परंपरा का हिस्सा हैं और इनमें भावनाओं और अभिव्यक्ति का प्रमुख स्थान है। दोनों ही संगीत शैलियाँ जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करती हैं, चाहे वह प्रेम, दुःख, हर्ष या आध्यात्मिकता हो। लोकगीतों में भी शास्त्रीय संगीत के तत्व जैसे राग और ताल का कुछ न कुछ समावेश होता है, हालांकि ये बहुत सरल होते हैं और इनके नियम शास्त्रीय संगीत की तुलना में अधिक लचीले होते हैं। लेकिन, दोनों के बीच कई भिन्नताएँ भी हैं। शास्त्रीय संगीत में राग और ताल के निर्धारण के लिए अत्यधिक सटीकता की आवश्यकता होती है, जबकि लोकगीतों में यह अधिक लचीलापन होता है। लोकगीतों का संगीत आम जनता के लिए होता है, जबकि शास्त्रीय संगीत अधिक परिष्कृत और शिक्षित वर्ग के लिए होता है। लोकगीतों में सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश अधिक होते हैं, जबकि शास्त्रीय संगीत में आध्यात्मिकता और आत्मा

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

की गहराई को व्यक्त करने पर जोर होता है। शास्त्रीय संगीत में प्रस्तुति का ढंग अधिक औपचारिक और व्यवस्थित होता है, जबकि लोकगीतों की प्रस्तुति सामान्य रूप से एक सामूहिक अनुभव होती है, जिसमें दर्शकों की सहभागिता भी होती है। लोकगीतों में संगीत की सरलता और रचनात्मकता पर बल दिया जाता है, जबकि शास्त्रीय संगीत में संगीत के जटिल सिद्धांत और तकनीकी कुशलता की महत्ता होती है।

निष्कर्ष

हिंदी लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा का सजीव प्रतिबिंब हैं, जिनमें जीवन के विविध अनुभव, परंपराएँ और सामूहिक भावनाएँ रची-बसी हैं। ये गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज के इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर और लोकमानस की संवेदनाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखने वाले अमूल्य स्रोत हैं। विवाह संस्कारों, धार्मिक अनुष्ठानों, ऋतु-परिवर्तनों और दैनिक जीवन से जुड़े इन गीतों ने सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोकगीतों का महत्व इस तथ्य से भी सिद्ध होता है कि वे ग्रामीण जीवन के रीति-रिवाजों और सामाजिक मान्यताओं को अपनी सरल भाषा और लय के माध्यम से संरक्षित करते हैं, जिससे लोकसंस्कृति की विशिष्ट पहचान सुरक्षित रहती है।

हालाँकि वर्तमान समय में लोकगीतों की परंपरा शहरीकरण, वैश्वीकरण और आधुनिक मनोरंजन साधनों की प्रबलता के कारण क्षीण होती जा रही है। युवा पीढ़ी का झुकाव फिल्मी तथा पाश्चात्य संगीत की ओर बढ़ने से लोकगीतों का सामाजिक दायरा संकुचित हुआ है। ऐसी परिस्थिति में आवश्यक है कि लोकगीतों का संरक्षण व्यवस्थित रूप से किया जाए। इसके लिए संकलन, लिप्यंतरण, डिजिटलीकरण, शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में समावेश और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से इन्हें नई पीढ़ी तक पहुँचाना जरूरी है। यदि इन प्रयासों को गंभीरता से अपनाया जाए, तो लोकगीत न केवल सांस्कृतिक स्मृति के रूप में सुरक्षित रहेंगे, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और सांस्कृतिक पहचान का आधार भी बनेंगे। इस प्रकार हिंदी लोकगीतों का संरक्षण आज सामाजिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी बन चुका है।

संदर्भ

1. सिंह, आर. (2010). "भारतीय लोकगीतों की परंपरा: एक अध्ययन". भारतीय लोक साहित्य शोध पत्रिका, 12(1), 45-52.
2. शर्मा, पी. (2011). "लोकगीतों का सांस्कृतिक महत्व और संरक्षण की आवश्यकता". संस्कृति और समाज, 8(3), 33-40.
3. गुप्ता, एस. (2012). "हिन्दी लोकगीतों में सामाजिक चेतना". लोकवार्ता, 15(2), 27-35.

4. वर्मा, के. (2013). "लोकगीतों का संरक्षण: चुनौतियाँ और समाधान". भारतीय संस्कृति अध्ययन, 9(4), 50-58.
5. दास, एम. (2014). "हिन्दी लोकगीतों की परंपरा और उनका विकास". साहित्य विमर्श, 11(1), 22-30.
6. चौधरी, एल. (2015). "लोकगीतों का संरक्षण: एक आवश्यक पहल". संस्कृति संवाद, 10(2), 41-49.
7. मिश्रा, आर. (2016). "हिन्दी लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना". पर्यावरण और संस्कृति, 7(3), 36-44.
8. कुमार, वी. (2017). "लोकगीतों के संरक्षण में तकनीकी उपाय". लोकसंस्कृति शोध पत्रिका, 14(1), 29-37.
9. सक्सेना, डी. (2018). "उत्तराखंड के लोकगीत: सामाजिक और पर्यावरणीय चेतना के प्रहरी". रिसर्च डायरेक्शन, 6(4), 34-40.
10. पटेल, एस. (2019). "हिन्दी लोकगीतों की प्रासंगिकता और संरक्षण". साहित्य समीक्षा, 13(2), 55-63.
11. जोशी, ए. (2020). "लोकगीतों का डिजिटल संरक्षण: एक अध्ययन". नई दिशा, 9(1), 20-28.
12. सिंह, टी. (2020). "लोक संगीत में शोध व आवश्यकता". जेटीआईआर, 7(3), 1234-1240.
13. राय, पी. (2021). "हिन्दी लोकगीतों में नारी चेतना". स्त्री विमर्श, 5(2), 47-55.
14. अग्रवाल, एन. (2021). "लोकगीतों का संरक्षण: वर्तमान परिप्रेक्ष्य". संस्कृति शोध, 12(3), 39-46.
15. कश्यप, जी. (2022). "हिन्दी लोकगीतों की परंपरा और उनका भविष्य". लोकधारा, 16(1), 31-38.